7
जनवरी–जून, 2023

ISSN: 2582-6530
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका

कंचनजंघा

भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का साझा उपक्रम

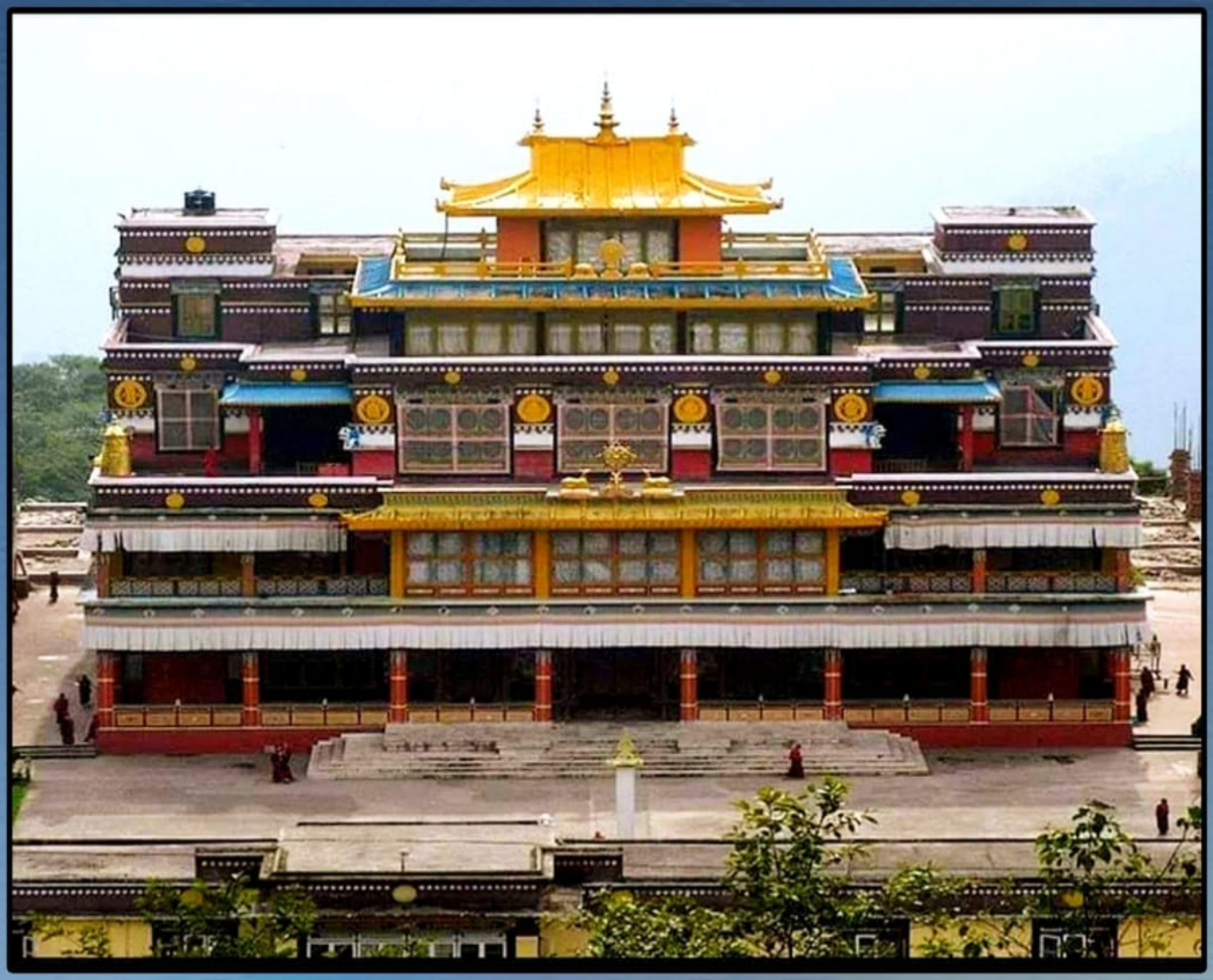

संपादक: प्रदीप त्रिपाठी

ISSN: 2582-6530

कंचनजंघा : विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका

कंचनजंघा

भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का साझा उपक्रम

वर्ष: 04, अंक: 07, जनवरी-जून, 2023

संपादक

प्रदीप त्रिपाठी

पत्राचार का पता

ओम साईं कुंज, मंदिर रोड

नीयर रंगीत गर्ल्स हॉस्टल, 06 माइल, गंगटोक

सिक्किम, पिन कोड : 737102

संपर्क : +91 - 6294913900 ईमेल : kanchanjanghapatrika@gmail.com

www.kanchanjangha.in

संपादन समिति

परामर्श मंडल

येसे दरजे थोंगछी

सी. कामलोवा

देवराज

भीम ठटाल

राजेश जोशी

किरन हजारिका

अनामिका

गजेंद्र पाठक

प्रदीप के शर्मा

तेजेन्द्र शर्मा

ओम जी उपाध्याय

समीक्षा समिति

भरत प्रसाद

रूपेश कुमार सिंह

जय कौशल

शोभा लिम्बू

संजय कुमार

जेनी मलसोमदोङकिमी

अखिलेश शंखधर

गोरखनाथ तिवारी

राजीव रंजन प्रसाद

अनुज कुमार

कवर पृष्ठ संयोजन

नन्दकिशोर 'नीलम'

संपादक

प्रदीप त्रिपाठी

संपादक मण्डल

सुवास दीपक

मिलनरानी जमातिया

जोराम यालाम नाबाम

चुकी भूटिया

अनुशब्द

देवचंद्र सुब्बा

फिल्मेका मारबानियांग

प्रबंधन एवं कला संपादन

कुँवर रवींद्र

गोविंद प्रसाद वर्मा

पंकज कुमार सिंह

कुमार गौरव मिश्र

राहुल 'निशांत'

संपादन सहयोग

जमुना बीनी

कविता कर्मकार

दीपक कुमार

तुलसी छेत्री 'तुलसी'

प्रीति सिंह

अरविंद कुमार यादव

ISSN: 2582-6530

कंचनजंघा

वर्ष: 04, अंक: 07, जनवरी-जून, 2023

इस अंक में...

संपादकीय

एक सदी की भारतीय नेपाली कहानियां वाया सुवास दीपक

लोक कथाएँ

तसेसङ (भगवान तसेथिङ की कथा) — डुप स्यूजोङ लेप्चा

(सिक्किम की लेप्चा लोककथा)

हिंदी के सजग प्रहरी

गुरु-दक्षिणा — जुमसी सिराम 'नीनो'

(स्मृति: रमण शांडिल्य)

लेख

न्यिशी जनजाति की सामाजिक संरचना — ताना नाय

रंगमंच पर 'अंधायुग' से टकराते रतन थियाम — संजीब कुमार

पूर्वोत्तर भारत की लोककथाओं में मातृत्व — सेतु कुमार वर्मा

जननेता हिजम इरावत सिंह: प्रगतिशील क्रांतिकारी जीवन, युगांतरकारी सृजन — देवराज

गालअ: पारंपरिक पोशाक के बाने में सांस्कृतिक विरासत — यागे काबाक

असमीया संस्कृति की सतरंगी गंध को समेटते कुबेरनाथ राय के निबंध — अनुपम भट्ट

अस्मिता को समर्पित अक्षर : जमुना बीनी की कहानियाँ — राजकुमार व्यास

हेलेन लेप्चा उर्फ़ सावित्री देवी: लेप्चा जनजाति की स्वतंत्रता सेनानी — सोनामित लेप्चा

मनुष्य और प्रकृति के सहचर मिजो कवि रोकुङ — श्रीप्रकाश मिश्र

कविताएं

जोनाली बरुवा की तीन कविताएं

आकाश वर्मा की तीन कविताएं

रूपा तामाङ की तीन कविताएं

तुलसी छेत्री 'तुलसी' की आठ कविताएं

अनूदित रचनाएँ

लोककथा (नेपाली से हिंदी)

सुनकेशरी मैया अनुवादक: चुकी भूटिया
(सिक्किम की लोककथा)
मूल: पुष्प शर्मा

कविताएं (नेपाली से हिंदी)

मनप्रसाद सुब्बा की दो कविताएं अनुवादक: बीना क्षत्रिय

प्रवीण राई जुमेली की चार कविताएं अनुवादक: सुवास दीपक

कविता (असमीया से हिंदी)

नीलिम कुमार की कविताएं अनुवादक: विनोद रिंगानिया

पूर्वोत्तर भारत का पौराणिक क्षितिज

मोपिन त्योहार की पौराणिकता गुम्पी डूसो

कहानी

खेल रीतामणि वैश्य

पुस्तक समीक्षा

पूर्वोत्तर भारत कोई पहेली नहीं है *वाया 'फेनी के इस पार'* प्रकाश उप्रेती

एक सदी की भारतीय नेपाली कहानियां वाया सुवास दीपक

(संपादकीय)

भारतीय नेपाली साहित्य को लेकर पाठकों के मन में कई तरह की भ्रांतियाँ हैं। आम पाठकों के ज़ेहन में नेपाली साहित्य का सामान्य आशय नेपाल के साहित्यकारों द्वारा लिखित साहित्य को समझा जाता है। गौरतलब है, नेपाली भाषा को भारतीय संविधान में शामिल हुए 32 वर्ष हो रहे हैं। भारतीय संविधान में मान्यता प्राप्त सूची में शामिल यह प्रतिष्ठित भाषाओं में से एक है। नेपाली भाषा विश्व के विभिन्न देशों जैसे भारत, नेपाल, सिंगापुर, ब्रिटेन, अमेरिका, बांग्लादेश आदि में बोली जाती है। नेपाल के अलावा भारत एक ऐसा देश है, जहाँ नेपाली बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है। स्पष्टत:, भारत में निवास करने वाले नेपाली भाषी रचनाकारों के द्वारा लिखित साहित्य को भारतीय नेपाली साहित्य के नाम से जाना जाता है।

हाल ही में सिक्किम के वरिष्ठ साहित्यकार सुवास दीपक द्वारा एक शताब्दी के भारतीय नेपाली कहानीकारों की कहानियों पर केंद्रित एक महत्वपूर्ण संचयन तैयार किया गया है। 'भारतीय नेपाली कहानी: एक सदी का सफ़र भाग-1' पुस्तक सुवास दीपक की दूरगामी और महत्वपूर्ण परियोजनाओं में से एक है। यह पुस्तक महज कहानियों का संग्रह भर नहीं बल्कि सौ वर्षों के पहाड़ी जीवन के उतार-चढ़ाव और सांस्कृतिक यात्रा का मुकम्मल दस्तावेज है। सुवास दीपक तक़रीबन छह दशकों से नेपाली और हिंदी भाषा के मध्य एक सेतु के रूप में अनवरत सक्रिय हैं। उनके अब तक दो दर्जन के करीब ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। यह पुस्तक नेपाली और हिंदी समाज के लिए अमूल्य थाती है। निश्चित रूप से सुवास दीपक का यह प्रदेय एक ऐतिहासिक और सु-चिंतित रचनात्मकता का प्रतिफलन है।

'भारतीय नेपाली कहानी: एक सदी का सफ़र' संचयन में भारतीय नेपाली साहित्य के 54 महत्वपूर्ण कहानियों को शामिल किया गया है। पुस्तक में कहानियों का अनुक्रम लेखकों के वरिष्ठता क्रम के अनुसार शामिल किया गया है। मिसाल के तौर पर समीरण छेत्री प्रियदर्शी, जगत छेत्री, नरबहादुर दाहाल एवं सानु लामा से होते हुए शांति छेत्री, देवकुमारी राई जुमेली एवं मोहन ठकुरी का नाम उल्लेखनीय है। इस संचयन का दूसरा खंड प्रकाशनाधीन है। निश्चित रूप से इस ऐतिहासिक उपलब्धि को प्रकाश में लाने का श्रेय पुस्तक के प्रकाशक चरित्र प्रोडक्शन, कलिमपोंग को जाता है।

पुस्तक के संदर्भ में सुवास दीपक ने अपने एक साक्षात्कार में कहा है कि- "भारतीय नेपाली कहानी की एक शताब्दी के इस कालखंड में इसने अपने विकास के अनेक सोपान तय किए हैं। भारतीय नेपाली कथाकार अधिकांशतः निम्न मध्यवर्ग एवं श्रमिक वर्ग से अपना संबंध रखते हैं। इन्हीं संस्कारों और परिस्थितियों के मध्य उनकी कहानियाँ अपना प्रभाव ग्रहण करती हैं।" संचयन में शामिल कहानियों में सामाजिक विद्रूपता, अस्मिता का संकट, विस्थापन की त्रासदी, चाय बागानों का जनजीवन, चारित्रिक जटिलता, हताशा एवं मोहभंग जैसे मुद्दे केंद्रीय विषय के रूप में उभरकर आए हैं। सुवास दीपक द्वारा संपादित